## 1.9 शब्दावली

**सामाजिक रूपांतरण :** यह एक विस्तृत अवधारणा है जिसमें एक ओर उद्विकास, प्रगति, परिवर्तन तथा दूसरी ओर विकास आधुनिकीकरण और क्रांति का अर्थ सम्मिलित है। इसका शाब्दिक अर्थ सामाजिक जीवन के स्वरूप, आकृति तथा चरित्र में परिवर्तन से है।

**आधुनिकीकरण :** एक परंपरागत कृषक, ग्रामीण, प्रथा-आधारित विशिष्टतावादी संरचना से नगरीय, औद्योगिक, प्रौद्योगिकी तथा सार्वभौमिकीय संरचना में होने वाले विकास की प्रक्रिया को आधुनिकीकरण कहा जाता है।

**क्रांति :** हिंसात्मक या अहिंसात्मक अप्रत्याशित सामाजिक परिवर्तन जो परिस्थिति को मोड़ दे या उसमें आमूल परिवर्तन लाये उसे क्रांति कहते हैं।

**सामाजिक समस्याएँ :** सामाजिक व्यवहार के प्रतिरूप जो स्वीकृत सामाजिक प्रतिमानों का उल्लंघन या शिकायतों के प्रति प्रतिरोध हैं, सामाजिक समस्याएँ कही जाती हैं।

**विचलित व्यवहार :** समाजशास्त्री इस अवधारणा के अत्यंत गंभीर अपराधों और नैतिक संहिताओं के उल्लंघन को सम्मिलित करते हैं। जब कभी लोगों द्वारा स्वीकृत 'सामान्य व्यवहार' का उल्लंघन किसी के व्यवहार द्वारा होता है तो उसे विचलित व्यवहार की संज्ञा दी जाती है।

## 1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

i) सामाजिक रूपांतरण एक व्यापक अवधारणा के रूप में सामाजिक गत्यात्मकता को इंगित करने के लिए प्रयुक्त होता है। इस अवधारणा का शाब्दिक अर्थ सामाजिक स्वरूप, आकृति अथवा चरित्र के परिवर्तन अथवा अपनी मूल पहचान को खो देने वाले बदलाव से है। मार्क्स के अनुसार रूपांतरण सामाजिक परिवर्तन का वह पक्ष है जो समाज में उत्पन्न होने वाले उन अंतर्विरोधों की ओर इंगित करता है जो समाज को त्वरित परिवतर्न या क्रांति की तरफ अग्रसर करता है। सामाजिक रूपांतरण उस परिवर्तन को निर्दिष्ट करता है जो समाज के स्वरूप में परिवर्तन या नवीन विरचनों की उत्पत्ति करता है।

ii) क) आधुनिकीकरण

यह उस अर्थव्यवस्था, राजनीति और औद्योगीकृत पूँजीवादी समाज का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें या तो विपुल समृद्धि है और या तो अत्यधिक अभाव या कष्ट। रूपांतरण का यह प्रतिरूप मानव जाति के एक बड़े भाग में निर्धनता, बेकारी और वंचना के लिए तथा एक छोटे हिस्से में विपुल समृद्धि, अत्युत्पादन और अत्युपभोग के लिए उत्तरदायी है।

ख) क्रांति

साम्यवाद के कार्यप्रणाली की, क्रांति के प्रतिफल के रूप में अपने साहचर्यों – तानाशाही, पुलिस आतंक, देश निकाला, मानवाधिकारों का हनन, उत्पादन में अवनति, अर्थव्यवस्था का पतन और दलीय पदाधिकारियों और राज्याधिकारियों के नए वर्ग की रचना के लिए आलोचना की जाती रही है।

iii) क) जोसेफ जे स्पेंगलेर : द डिक्लाइन ऑफ द वेस्ट

ख) पी.ए. सोरोकिन : द सोशल एंड कल्चरल डाइनमिक्स